Ashish Kumar Thakur
B.A.II. History(H), paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

युआन शिह-काई तथा क्रांतिकारियों में समझौता

युआन शिह-काई वैध राजसत्ता की स्थापना का समर्थक था। उसने अपनी शक्ति को बनाये रखते हुए मंचू सेनाओं और क्रांतिकारियों दोनों की शक्ति का संतुलन रखने की कोशिश की।

उसी समय जबकि वह शंघाई की क्रांतिकारी सरकार से बातचीत कर रहा था। नानकिंग में सनयात सेन के नेतृत्व में क्रांतिकारी गणतंत्रीय सरकार का गठन हो गया।

गणतंत्रवादियों ने युआन शिह-काई को प्रस्ताव भेजा कि यदि वह गणतंत्र को स्वीकार कर लेगा तो उसे राष्ट्रपति स्वीकार कर लिया जायेगा।

12 feb, 1912 को युआन शिह-काई और सनयात सेन के मध्य समझौता हो गया। उसके अनुसार -

(i) मंचू राजवंश का शासन समाप्त किया गया।

(ii) अल्पवयस्क सम्राट हुआन तुंग को आजीवन नाममात्र के सम्राट की पदवी का प्रयोग करने की अनुमति दी गई।

(iii) युआन शिह-काई को अस्थाई राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया।

(iv) सनयात सेन की क्रांतिकारी परिषद ने अपनी सरकार को भंग करके युआन शिह-काई को राष्ट्रपति स्वीकार कर लिया।

सम्राट हुआन तुंग की ओर से 12 feb 1912 को घोषणा की गई कि सम्राट ने अपने अधिकार युआन शिह-काई को सौंप दिए हैं, ताकि वे गणतंत्र की स्थापना कर सकें। इस प्रकार चीन में गणतंत्र की स्थापना हुई।

सनयात सेन [Sanyat Sen] :-

चीनी क्रांति के जनक सनयात सेन का जन्म Nov. 1866 में कैंटन में एक निर्धन परिवार में हुआ था। डॉ० सनयात सेन मंचू शासन को चीन के शोषण के लिए दोषी मानते थे। मंचू शासन के विरोध के लिए उन्होंने एक क्रांतिकारी संस्था का गठन किया, परन्तु चीनी सरकार ने उनके विरुद्ध कार्यवाही की अतएव सनयात सेन को जापान भाग जाना पड़ा।

Ashish

Scanned with CamScanner

जापान, यूरोपीय देशों एवं अमेरिका में अपने प्रवास के दौरान सनयात सेन समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हुए।

बॉक्सर विद्रोह के समय उन्होंने विदेश में रहने वाले चीनीयों को अपनी ओर आकर्षित किया।

जापान में 1905 ई० में उन्होंने तुंग-मिंग-हुई (समग्र समाज का संगठन) गठित किया। इस संगठन में मिन पाओ (लोकमत) नामक पत्रिका का प्रकाशन किया

1911 ई० की चीनी क्रांति के समय सनयात सेन चीन लौट आये और नानकिंग की क्रांतिकारी सरकार के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए किन्तु 1912 ई० में चीन की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए उन्होंने युआन शिह-काई को राष्ट्रपति बनाना स्वीकार किया।

परन्तु युआन शिह-काई ने जब तानाशाही शासन की स्थापना का प्रयास किया तो सनयात सेन ने उसका तीव्र विरोध किया और 1912 ई० में कुओमिंगतांग (देश जनता दल) का गठन किया।

युआन-शिह-काई की मृत्यु (1916) के पश्चात इस दल ने अपनी शक्ति में वृद्धि की और कैंटन में सरकार का गठन किया। कुओ मिन तांग ने सनयात सेन के नेतृत्व में 3 सिद्धान्तों को प्रमुख आधार बनाया –

(i) 1924 ई० के राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में दल का घोषणा पत्र

(ii) डा० सनयात सेन द्वारा घोषित दल के 3 सिद्धान्त – सान-मिन-चू

(iii) 12 अप्रैल, 1924 ई० को घोषित राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के मूल सिद्धान्त।

जनता के तीन सिद्धान्त में निम्न थे :–

(i) मिन त्सू (राष्ट्रवाद)
(ii) मिन चुआन (जनतंत्र)
(iii) मिन शेंग (जनता की आजीविका)

Scanned with CamScanner

सनयात सेन अपने अंतिम समय तक पीकिंग और कैण्टन सरकार मे समझौता करना चाहते थे। उन्ही प्रयासो मे 12 March 1925 ई० मे उनकी मृत्यु हो गई।

डा० सनयात सेन ने अपनी मृत्यु से पूर्व एक वसीयतनामा लिखा था। वह वसीयतनामा राष्ट्रवादी चिंतन को ठोस रूप प्रदान करता था। उनका वसीयतनामा दल का पवित्र सिद्धान्त बन गया और जनता के 3 सिद्धान्त (सान मिन चू) राष्ट्रवादियों का धार्मिक ग्रंथ बन गया।

हेराल्ड विनाके लिखते है कि वे संगठन ज्ञान एवं विवेक के प्रेरणा स्रोत हो गए। क्लाइड लिखते है कि वे राष्ट्रवादी आंदोलन के सारे आदर्शवाद के प्रतीक बन गए। कन्फ्यूशियसवाद का स्थान सनयातसेनवाद ने ले लिया।

सनयात सेन ने चार बड़ी जरूरतों – कपड़ा, खाना, घर एवं परिवहन पर विशेष ध्यान दिया था।

4 May 1919 ई० को बीजिंग मे युद्धोत्तर शांति सम्मेलन के विरोध मे विशाल प्रदर्शन हुआ था।

इन क्रांतिकारियों ने एक भाषा के इस्तेमाल, पैरो को बांधने की प्रथा, औरतों की अधीनता की समाप्ति, शादी मे समानता एवं गरीबी समाप्त के लिए आर्थिक विकास जैसे सुधारो की मांग की।

सनयात सेन ने पूंजी के नियमन एवं भूमि अधिकारो की बराबरी पर भी जोर दिया।

Ashish